# डॉ. नामवर सिंहः हिंदी साहित्य का रंगा हुआ सियार

**एक ऐसा वामपंथी विचारक जो लिखता कुछ और है, कहता कुछ और है, करता कुछ और है...पुरस्कार-सम्मान के लिए सत्ता से गलबहियां करने की आदत पुरानी है...अब संघियों का दुशाला ओढ़ लिया**

**-वाई. के. रज्जन**

हिंदी साहित्य के सबसे बड़े आलोचक डॉ. नामवर सिंह 28 जुलाई को 90 साल के हो गए लेकिन उम्र के इस पड़ाव पर इस चोटी के आलोचक ने अपनी जो भद्द पिटवाई है, उससे तमाम जनवादी, वामपंथी लेखक, कवि, कथाकार और अन्य बौद्धिक खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। हिंदी साहित्य का इतना कद्दावर व्यक्तित्व इस समय संघियों के चंगुल में जाता हुआ लग रहा है। संघी किस तरह अपनी चालें चलते हैं, यह घटना उसका नायाब नमूना है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र पर इस वक्त आरएसएस का कब्जा है। इसके मुखिया आजकल राम बहादुर राय हैं, जो पहले एक प्रखर पत्रकार और संघ प्रचारक थे। राय के नेतृत्व में इस कला केंद्र ने नामवर को अपने जाल में फंसाया। केंद्र ने नामवर का 89वां जन्मदिन मनाने की घोषणा 28 जुलाई 2016 को की। इसमें मुख्य अतिथि केंद्रीय गृह मंत्री राजनाथ सिंह व राज्य मंत्री डॉ. महेश शर्मा को बुलाया गया। शर्मा के पास आजकल कला संस्कृति विभाग है। आपको याद होगा कि दादरी कांड में महेश शर्मा की क्या भूमिका रही और वहां क्या हुआ था।

नामवर सिंह न सिर्फ इस कार्यक्रम में शामिल हुए, बल्कि उन्होंने दोनों मंत्रियों के हाथों से खुद को सम्मानित भी करवाया। इस मौके पर जो यशोगान होते हैं, उनका जिक्र किए बिना बात को आगे बढ़ाते हैं।जब इस कार्यक्रम की घोषणा हुई तो नामवर सिंह से तमाम साहित्यकार पूछते रहे कि क्या वो इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र वाले कार्यक्रम में संघियों का दुशाला पहनने और सम्मान लेने जाएंगे। नामवर ने कहा कि सम्मानित होने या पुरस्कार लेने में विचारधारा आड़े नहीं आनी चाहिए। लोग सोशल मीडिया में और इधर-उधर लिखकर नामवर को संकेत देते रहे कि उन जैसे व्यक्तित्व को वहां जाकर पुरस्कार लेना ठीक नहीं होगा। इससे विवाद खड़ा होगा।...और राम बहादुर राय की चालाकी देखिए, उन्होंने जानबूझ कर राजनाथ सिंह को इस कार्यक्रम में बुलाया। वो भी इसके जरिए कुछ संकेत देना चाहते थे। उसकी चर्चा आगे करूंगा। अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ ने कार्यक्रम से ठीक एक दिन पहले 27 जुलाई 2016 को एक बयान जारी कर नामवर सिंह के कार्यक्रम से खुद को अलग करने की घोषणा की। नामवर सिंह इस संस्था के अध्यक्ष रहे हैं। नामवर के नेतृत्व में यह संस्था परवान चढ़ी लेकिन बयान सामने आने के बाद हिंदी साहित्य जगह हैरान रह गया। नामवर हमेशा से खुद को वामपंथी विचारक के रूप में प्रचारित करते रहे, जो वो हैं भी। वो भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के टिकट पर 1959 में चंदौली (यूपी) से चुनाव भी लड़ चुके हैं। उन्होंने 1960 में सीपीआई के मुखपत्र जनयुग का संपादन भी किया है। हिंदी आलोचना के संस्थापक रहे राम विलास शर्मा से भी आगे जाकर आलोचना के क्षेत्र में जिस व्यक्ति ने नए आयाम दिए वो शख्स नामवर सिंह ही हैं। उनकी प्रतिभा में कहीं कोई कमी नहीं लेकिन उनकी कुछ कमजोरियों ने उन्हें हमेशा विवाद में रखा। सबसे बड़ी उनकी कमजोरी पुरस्कार लेने और सम्मानित होने की रही है। राम बहादुर राय जो आरएसएस बौद्धिकों के गुरु घंटाल माने जाते हैं, वे नामवर की इस कमजोरी को जानते थे और अपने जाल में फंसा लिया।

आखिर नब्बे साल के होने वाले इस शख्स को इतनी ऊंचाई पर पहुंचने के बाद और वामपंथ का झंडा बुलंद रखने के बाद इस तरह के सम्मान समारोह में संघियों का दुशाला ओढ़ने की क्या जरूरत थी। इतना ही नहीं हिंदी साहित्य और राजनीति के कई अहम मुकामों पर इस शख्स की भूमिका हमारे जैसे लोगों को हमेशा टीस देती रहेगी। असहिष्णुता के खिलाफ देश में जब एक माहौल बना और तमाम जाने माने लेखक, कलाकार, फिल्म वाले अपने राष्ट्रीय पुरस्कार लौटाने लगे तो नामवर सिंह ने टिप्पणी की थी कि ये लोग खबरों में बने रहने के लिए ये नौटंकी कर रहे हैं। सोचिए महाश्वेता देवी, कृष्णा सोबती, अशोक वाजपेयी, उदय प्रकाश, एम. के. रैना जैसे चोटी के साहित्यकारों ने जब अपने राष्ट्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार लौटाने की घोषणा की तब इस शख्स ने ऐसी टिप्पणी की थी। हद तो यह है कि नामवर के छोटे भाई और बड़े कथाकार केदारनाथ सिंह ने भी अपना पुरस्कार लौटा दिया। तब भी नामवर अपने बयान पर शर्मिंदा नहीं हुए। आपको याद होगा कि दादरी के बिसहड़ा गांव में गाय के मांस की अफवाह मात्र पर वहां के निवासी अखलाक की हिंदुओं की भीड़ ने हत्या कर दी थी। अखलाक का एक बेटा भारतीय वायुसेना में है। घटना के दो दिन बाद मंत्री महेश शर्मा पहुंचे थे और वहां मंदिर की चौपाल पर लोगों को संबोधित करके कहा कि जिन हिंदू युवकों के खिलाफ इस मामले में केस दर्ज किया गया है, उनकी वो मदद करेंगे। लोगों को घबराने की जरूरत नहीं। ...मुझे ये समझ नहीं आ रहा कि इतने बड़े वामपंथी विचारक को एक बार भी विचार नहीं आया कि किन मंत्रियों के साथ वो मंच साझा कर रहे हैं। अगर नामवर सिंह सिर्फ राम बहादुर राय के हाथों सम्मान ले लेते तो भी गनीमत थी कि चलो एक बड़े पत्रकार के हाथों सम्मान ग्रहण किया। लेकिन नामवर सिंह ने अपनी विचारधारा की विपरीत विचारधारा को महत्व दिया।

...लेकिन नेताओं के साथ संबंध रखने का नामवर सिंह को पुराना शौक रहा है। फिलहाल वो राजनाथ के करीबी लोगों में हैं। लेकिन कभी वो पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के करीबी लोगों में भी रहे हैं। वीपी सिंह ने अपनी कविताओं की किताब का विमोचन समारोह अपने प्रधानमंत्री निवास पर किया। उस कार्यक्रम में नामवर सिंह को भी बुलाया गया। नामवर ने वीपी सिंह की कविताओं की शान में वो कसीदे पढ़े कि एक बार को भ्रम हुआ कि मुक्तिबोध जैसे कवियों को हिंदी की मुख्य धारा में लाने वाला नामवर आज वीपी सिंह की आशु कविताओं की तारीफ कर रहा है। इतना ही नहीं इसी कार्यक्रम में नामवर ने वीपी सिंह को आधुनिक युग का भृतहरि बता डाला। ऐसी सत्य घटनाओं से नामवर की जिंदगी भरी पड़ी है, जब उन्होंने अपनी विचारधारा को खूंटी पर टांगकर सत्ता की गोदी में जाकर बैठने की कोशिश की।

इस वामपंथी विचारक की एक और घटना याद आ रही है। अक्टूबर 1987 में हंस पत्रिका में इस शख्स ने एक लेख लिखा और उन लोगों पर हमला बोला जो लोग उस वक्त यूपी में उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने की मांग कर रहे थे। बिहार में उस वक्त उर्दू को दूसरी राजभाषा का स्टेटस मिल चुका था। नामवर सिंह ने हंस में लिखा कि कुछ लोग यूपी में उर्दू जिहाद चला रहे हैं। उन्होंने लिखा कि मत भूलिए कि ये मुसलमानों की भाषा है जिसने भारत के टुकड़े करवाकर पाकिस्तान बनवा दिया। जिन लोगों ने उस लेख को हंस में पढ़ा था, उन्होंने उसे कई बार पढ़ा कि कहीं वे गलत तो नहीं पढ़ गए। राजेंद्र यादव पर भी जातिवादी होने के आरोप लगते रहे हैं और मुलायम सिंह यादव के यूपी कार्यकाल व केंद्र में मंत्री रहने के दौरान राजेंद्र के फायदे उठाने के भी आरोप लगे। उन्हीं की पत्रिका में नामवर का ऐसा संप्रदायिक सोच वाला लेख छपने पर हंस के पाठकों ने जी भरकर उन्हें कोसा। लेकिन नामवर तो वो लेख छपवाकर अपना काम सिद्ध कर चुके थे।

अगस्त 1995 में इंडिया इंटरनैशनल सेंटर में एक सेमिनार आयोजित हुआ। इतिहासकार शाहिद अमीन ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी-उर्दू के बीच जो गैप है, उसको कम करने की कोशिश की जानी चाहिए। इसी कार्यक्रम में जब नामवर सिंह की बोलने की बारी आई तो उन्होंने शाहिद अमीन को न सिर्फ खरी-खोटी सुनाई बल्कि ये तक कहा कि हिंदी का मतलब हिंदुस्तान और हिंदू। उर्दू पाकिस्तान चली गई। नामवर ने वहां कहा था कि हम लोग दो अलग-अलग कौम हैं, जिनकी भाषा और संस्कृति अलग-अलग है।

उन्हें बीजेपी महिला विंग की प्रमुख मृदुला सिन्हा की पुस्तक के विमोचन समारोह में बुलाया गया। नामवर ने उस कार्यक्रम में मृदुला की कविताओं की जमकर तारीफ की। विवादास्पद राजनीतिज्ञ पप्पू यादव की जीवनी प्रकाशित हुई। उस पुस्तक के विमोचन समारोह में नामवर भी पहुंचे। वहां उन्होंने जमकर पप्पू यादव की तारीफ की और उन्हें सेल्यूट भी मारा।

नामवर के बारे में जब-तब तमाम तरह की बातें सुनने को मिलती थीं कि वो वामपंथी होने के बावजूद वो घोर जातिवादी हैं। हिंदी विश्वविद्यालय की कमान जब उनके पास थी तब ये आरोप खुलकर सामने आए थे। वहां इंटरव्यू देने कई टीचरों व छात्रों से उन्होंने उनकी जाति पूछ डाली थी। वो लोग हतप्रभ रह गए कि ऐसा वामपंथी विचारक जातिवादी कैसे हो सकता है।

कथाकार शिवमूर्ति ने तहलका (हिंदी) अखबार को 23 मई 2014 को दिए गए इंटरव्यू में कहा था कि नामवर सिंह अपनी सुविधा के अनुसार आलोचना कर्म करते हैं। उनकी बात अब ज्यादा सटीक मालूम पड़ती है। उन्होंने कहा था कि आलोचक लकड़हारे की भूमिका में आ गए हैं, वे माली नहीं बने रहना चाहते। वे गॉडफादर बनना चाहते हैं। उन्होंने कहा था कि नामवर ने चार दशक से कहानियां लिखने वाले कई कथाकारों के बारे में कहा कि उन्होंने उन्हें पढ़ा ही नहीं और कई बार वो सिर्फ चार कहानी लिखने वाले को बड़ा कथाकार बता देते थे। यही वजह रही कि बतौर आलोचक उनकी साख खत्म होती गई। जिन्हें राह दिखानी चाहिए वे जाल में फंसने पर चिल्लाते हैं। राजनीति में वामपंथियों से अपेक्षा रहती है कि वो मोर्चों पर डटे रहेंगे लेकिन वे लोग मामूली फायदे के लिए सत्ता का साथ दे देते हैं, पकड़े जाने पर कहते हैं...अब और नहीं। तमाम छोटी-छोटी घटनाओं ने नामवर को विवादों में ला खड़ा किया। वो हर दिन नया विवाद खड़ा कर देते हैं।

हालांकि हिंदी साहित्य आलोचना में उनके योगदान को कोई भुला नहीं सकता लेकिन जो उन्होंने किया वो सबके सामने हैं। एक सामान्य सा आदमी जिसे हिंदी साहित्य में रुचि होगी तो जब वो ऐसे विरोधाभासी चरित्र वाले साहित्यकार से सामना करेगा तो उसका कन्फ्यूजन हिंदी भाषा साहित्य को लेकर और बढ़ जाएगा। ....बहरहाल, इतने विवादों के बावजूद हम लोग नामवर सिंह की दीर्घायु की कामना करते हैं। वो 100 साल जीना चाहते हैं, हमारा कहना है कि वो 150 साल और जिएं।

# तुम्हे खाते देख फरिश्तों का भी पेट भर जाएगा इरोम

सुना है, मणिपुर की आयरन लेडी इरोम शर्मिला 9 अगस्त को अपना अनशन पूरा करने वाली हैं। यानी 16 बरस बाद उनके हलक से कोई निवाला उतरेगा। मैं रोमांचित हूं, यह जानने के लिए कि वह क्षण कैसा होगा। कल्पना करने की कोशिश करूं तो बचपन में देखा एक कॉर्टून याद आता है, जिसमें श्रीकृष्ण द्रोपदी के द्वारा परोसे गए अन्न के एक कण को उदरस्थ करके कहते हैं, बस एक अन्न का यह दाना सुख देगा मुझको मनमाना। यकीनन इरोम जब पहला निवाला लेंगी तो उन्हें देखकर ' फरिश्ते भी तृप्त' हो जाएंगे।

इरोम, सत्याग्रह की एक नई परिभाषा, अनवरत संघर्ष का दूसरा नाम, जीवटता की पराकाष्ठा और समर्पण की अनूठी मिसाल हैं, जिन्होंने अपनी पूरी जवानी मणिपुर के लोगों के नाम कर दी। या यूं कहें, अपने लोगों को पुलिसिया ज्यादतियों से बचाने के लिए कुर्बान कर दी। वे एक-दो, चार नहीं पूरे 16 बरस से एक ऐसे अहिंसक आंदोलन को जी रही हैं, जिसकी कल्पना मात्र से लोगों के 'रोंगटे' खड़े हो सकते हैं। जरा सोचकर तो देखिए, क्या उम्र थी उनकी जब पहली बार पुलिस को एक बच्चे पर जुल्म करते देखा। वे अपनी दोस्त से मिलने गईं थीं, साइकिल से लौटते समय पुल के समीप तीन लोगों को खड़े देखा, जिनमें एक बच्चा था। तभी पुलिस की एक लॉरी आई और गाड़ी में बैठे-बैठे एक पुलिसवाले ने उस बच्चे को बंदूक के बट से मारना शुरू कर दिया। उस दिन इरोम के भीतर बहुत कुछ बदल चुका था।

फिर 2 नवंबर 2000 का वह दिन आया, जब अफस्पा की आड़ में मणिपुर में नरसंहार हुआ। उस दिन गुरुवार था, मणिपुर में ज्यादातर महिलाएं गुरुवार को देवी का व्रत रखती हैं। उन्हें विश्वास है कि ' गुरुवार को देवी भ्रमण के लिए आती हैं, व्रत की पवित्रता उन्हें देवी की कृपा पात्र बनाएगी।' इरोम ने भी उस दिन उपवास किया था, ' जब 10 लोगों की हत्या की खबर मिली तो कुछ खाते नहीं बना और उसके बाद उन्होंने कभी उपवास नहीं खोला।' अफस्पा के खिलाफ चट्टान की तरह अड़ गईं।

हालांकि उपवास के तीसरे-चौथे दिन ही पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और तब से उन्हें जिंदा रखने के लिए नाक के जरिये रोज 1600 कैलोरी दी जा रही है। कई बार कोर्ट उन्हें रिहा कर चुकी है और जितनी बार कोर्ट उन्हें आरोप मुक्त करती उतनी ही बार पुलिस उन्हें उसी आरोप में गिरफ्तार कर लेती। इसी कारण जेल से सर्वाधिक बार रिहा होने का रिकॉर्ड भी उन्हीं के नाम है।

उनके साथ उनकी मां भी अपनी तरह का सत्याग्रह कर रही हैं। इरोम अनशन शुरू करने से पहले मां की इजाजत लेने गई थीं। मां का आशीर्वाद लिया, लेकिन यह नहीं बताया कि किस बात की अनुमति ले रही हैं। हालांकि बाद में मां को भी अहसास हुआ कि इरोम जो कर रही हैं, सही कर रही हैं। उन्होंने अपनी तरह से इरोम के संघर्ष को समर्थन दिया, इन वर्षों में वे अब तक इरोम से नहीं मिली हैं।

कैसा लगता है, ना इरोम के इस संघर्ष की दास्तां को सुनकर कि जिस देश की आजादी बरसों-बरस के आंदोलन का नतीजा है, उसी देश की एक बेटी को लोगों के हक के लिए इतनी लंबी लड़ाई लड़ना पड़ी और किसी का कलेजा नहीं पसीजा। इरोम की नाक में नली डली हुई थी और हमारे भाग्य विधाता महलनुमा आवासों में सुकून से खा-पी रहे थे। कैसे उतरता होगा उनके हलक से निवाला, कितने इंच का सीना चाहिए ऐसी निर्लज्जता के लिए।

खैर, इरोम अब अनशन छोडने जा रही हैं। हालांकि वजह निराशाजनक है कि सरकार ने कभी उनके अनशन पर सकारात्मक रुख नहीं दिखाया। उनकी मांगों पर संवेदनशीलता नहीं दर्शाई, पर खुशी इस बात की है कि इरोम निराश नहीं हुई हैं। वे राजनीति की राह पर चलकर खुद बदलाव का जरिया बनना चाहती हैं। ठीक बर्मा की आन सू की तरह। आखिरी बार क्या खाया था, इसके बारे में उन्होंनें अपनी किताब में लिखा है कि वे बेकरी से मिठाई के दो पैकेट लेकर आई थीं। मिठाई कौन सी थी यह तो याद नहीं है, लेकिन इतना याद है कि वे घर के पीछे बैठकर अकेले ही दोनों पैकेट खा गई थीं। काश इरोम 16 बरस बाद फिर बांस के उन्हीं पेड़ों के नीचे जाकर बैठे और उसी मिठाई से अपना अनशन पूरा करे और हम सभी उसके स्वाद को महसूस कर पाएं।.....

**- अमित मंडलोई संपादक पत्रिका, ग्वालियर**